हफ़्तावार रिसाला : 382
Weekly Booklet : 382

Chori Daketi (Hindi)

चोरी डकैती

(सफ़हात : 28)

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**चोरी डकैती**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

चोरी डकैती

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

''सआ़दतुद्दारैन'' में है कि جَاءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ एक शख़्स दरबारे रिसालत में हाज़िर हुवा فَشَكَا اِلَيْهِ الْفَقْرَ وَضِيْقَ الْعَيْشِ وَالْمَعَاشِ और फ़क़्रो फ़ाक़ा और तंगिये मआ़श की शिकायत की। तो **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِذَا دَخَلْتَ مَنْزِلَكَ فَسَلِّمْ اِنْ كَانَ فِيْهِ اَحَدٌ اَوْ لَمْ يَكُنْ فِيْهِ اَحَدٌ या'नी जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कह लिया करो चाहे घर में कोई हो या न हो, फिर मुझ पर सलाम कहा करो और एक मरतबा ''قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ'' पढ़ लिया करो। उस शख़्स ने ऐसा ही किया तो **अल्लाह** पाक ने उस पर रिज़्क़ खोल दिया ह़त्ता कि उस के हमसायों और रिश्तेदारों को भी उस रिज़्क़ से ह़िस्सा पहुंचा। (سعادۃ الدارین، ص84)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सातवें आस्मान का फ़िरिश्ता

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने एक मरतबा सफ़र के लिये त़ाइफ़ से एक ख़च्चर किराए पर लिया, ख़च्चर वाला डाकू था, वोह आप को सुवार कर के ले चला और एक वीरान व सुन्सान जगह पर ले जा कर ख़च्चर से उतार दिया और आप की त़रफ़ ख़न्जर ले कर ह़म्ले के इरादे से बढ़ा, वहां हर त़रफ़ लाशों के ढांचे बिखरे पड़े थे, आप ने उस से फ़रमाया : ऐ शख़्स ! तू मुझे क़त्ल करना चाहता है तो मुझे इतनी मोहलत

दे दे कि मैं दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लूं। उस बद नसीब ने कहा कि अच्छा तू नमाज़ पढ़ ले, तुझ से पहले भी बहुत से मक़्तूलों ने नमाज़ें पढ़ीं थीं मगर उन की नमाज़ों ने उन की जान न बचाई।

ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो वोह क़त्ल करने के लिये मेरे क़रीब आ गया, मैं ने दुआ़ मांगी और "یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ" कहा। ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ शख़्स ! तू इन को क़त्ल मत कर। डाकू येह आवाज़ सुन कर डर कर इधर उधर देखने लगा, जब कोई नज़र न आया तो वोह फिर मुझे क़त्ल करने के लिये आगे बढ़ा, मैं ने दोबारा बुलन्द आवाज़ से "یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ" कहा, फिर ग़ैबी आवाज़ आई। तीसरी मरतबा जब मैं ने "یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ" कहा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स घोड़े पर सुवार है, उस के हाथ में नेज़ा है और नेज़े की नोक पर आग का एक शो'ला है। उस शख़्स ने आते ही डाकू के सीने में इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि नेज़ा उस के सीने को चीरता हुवा पार निकल गया और वोह डाकू ज़मीन पर गिर कर मर गया। फिर वोह सुवार मुझ से कहने लगा कि जब तुम ने पहली मरतबा "یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ" कहा तो मैं सातवें आस्मान पर था, जब दूसरी मरतबा तुम ने "یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ" कहा तो मैं आस्माने दुन्या पर था और जब तीसरी मरतबा तुम ने "یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ" कहा तो मैं तुम्हारे पास तुम्हारी मदद के लिये आ गया।

(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 2/117, करामाते सह़ाबा, स. 322)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

क्यूंकर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

चोरों और डाकूओं के मज़ालिम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के मुबारक नाम की बरकतों से बड़ी बड़ी मुसीबतें दूर हो जाती हैं। ज़ाहिरी अस्बाब इख़्तियार करने के साथ साथ **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपनी परेशानी दूर होने की इल्तिजा भी करनी चाहिये। बारहा ऐसी ग़ैबी इमदाद हो जाती है कि बन्दा हैरान रह जाता है। गुज़श्ता वाक़िए में ज़ालिम डाकू की मौत का बड़ा इब्रत नाक बयान है। अफ़्सोस ! कई परेशानियों और दुखों के इलावा चोरों, डाकूओं ने अस्लहे के ज़ोर पर छीना झपटी कर के मुख़्तलिफ़ तरह की ज़ेहनी, जिस्मानी तक्लीफ़ों के साथ साथ महंगाई से परेशान अवाम में ख़ौफ़ो हिरास फैला रखा है। आए दिन चोरी, डकैती की ख़बरें सुनने को मिलती हैं बल्कि सोशल मीडिया पर अब ऐसी वीडियोज़ का सिल्सिला बंध गया है। कहीं किसी ग़रीब के घर में घुस कर बच्ची का जहेज़ जिसे वालिद और भाई ख़ून पसीना बहा कर जम्अ करते हैं, उसे लूट कर ले जाते हैं और कहीं मेहनत मज़दूरी करने वाला तनख़्वाह ले कर ख़ुशी ख़ुशी घर जा रहा होता है तो रक़म छीन कर येह ज़ालिम उस ग़रीब की ख़ुशी को ग़म में बदल देते हैं। याद रखिये ! चोरी, डकैती हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **अल्लाह** पाक **सूरतुल बक़रह**, आयत नम्बर 188 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ।

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना हराम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर हो या छीन कर, चोरी से या जूए से या हराम तमाशों या हराम कामों या हराम चीज़ों के बदले

या रिश्वत या झूटी गवाही से येह सब मम्नूअ़ व ह़राम है।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 2, तह़्तल आयह : 188, स. 52)

ज़ुल्मो सितम की आंधियां चला कर अस्लह़े के ज़ोर पर या किसी भी त़रह़ से चोरी, डकैती करने वालों को ख़ुदाए अह़्कमुल ह़ाकिमीन की ख़ुफ़्या तदबीर (या'नी छुपे फ़ैसले) से डरना चाहिये, ज़िन्दगी का भरोसा नहीं, मौत किसी वक़्त और कहीं भी आ सकती है, न जाने किस गोली पर आप का नाम लिखा हो ! अख़्बारात में ऐसी ख़बरें भी आती हैं कि अपने ही साथी डाकू की गोली लगने से दूसरा डाकू मारा गया और कभी चोर, डाकू पोलीस की गोली का शिकार हो कर अपने अन्जाम को पहुंच जाते हैं। चोरों की बुराई के लिये इतना ही काफ़ी है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : चोर पर **अल्लाह** पाक ने ला'नत फ़रमाई है। (مسلم، ص716، حدیث:4408)

आ़रिज़ी ख़ुशियों और फ़ानी दुन्या की ख़ातिर चोरी, डकैती के ज़रीए़ ह़राम माल जम्अ़ करने वालों को ख़ौफ़े ख़ुदा से घबरा कर बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में सच्चे दिल से तौबा कर लेनी चाहिये कि अगर **अल्लाह** पाक की रह़मत से दूर हो गए तो मरने के बा'द क्या बनेगा ? अगर क़ब्रो ह़श्र में अ़ज़ाबे इलाही में गिरिफ़्तार हो गए तो फिर कौन बचाएगा ? कम खा कर, ह़लाल रोज़ी कमाने की फ़िक्र करनी चाहिये, माले ह़राम से लाखों, करोड़ों रुपै ह़ासिल कर के ऐ़श भरी ज़िन्दगी गुज़ार भी ली फिर भी एक दिन मरना है, क़ब्र में मालो दौलत साथ नहीं जाएगा, यक़ीन न आए तो किसी मय्यित का कफ़न देख लीजिये। क्या आप ने कभी किसी कफ़न में जेब देखी है ? न जाने किस मज़्लूम की बददुआ़ आप के लिये दुन्या व

आख़िरत की बरबादी व हलाकत का बाइस बन जाए। चोरों, डाकूओं और इस त़रह़ के ज़ुल्मो सितम ढाने वालों की ज़िन्दगी और मौत दोनों बड़ी क़ाबिले मज़म्मत होती हैं। चूहों, बिल्लियों की त़रह़ छुप कर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं बल्कि कभी पोलीस या अ़वाम के हाथों ऐसी इ़ब्रत नाक मौत मारे जाते हैं कि रूह़ कांप जाती है। वैसे भी इन बद नसीबों के मरने पर लोगों को ग़म भी नहीं होता। **अल्लाह** करीम तमाम आ़शिक़ाने रसूल की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और हम सब को ज़ालिमों के ज़ुल्म और चोरी डकैती वग़ैरा आफ़ातो बलिय्यात से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। **अल्लाह** पाक हमें ईमानो आ़फ़ियत के साथ सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में, जल्वए मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत की मौत नसीब करे और हमारा मदफ़न ख़ैर से जन्नतुल बक़ीअ़ बनाए। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुन्या में हर आफ़त से बचाना मौला ऊ़क़्बा में न कुछ रन्ज दिखाना मौला
बैठूं जो दरे पाके पयम्बर के हुज़ूर ईमान पर उस वक़्त उठाना मौला

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 445)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

डाकूओं का अन्जाम

बन्दों पे ज़ुल्मो सितम की आंधी चला कर, डरा, धम्का कर अस्लह़ा दिखा कर, ह़राम माल ह़ासिल करने वालों को **अल्लाह** पाक से डरना चाहिये क्यूं कि चोरों, डाकूओं के बारे में क़ुरआनो अह़ादीस में बड़ी वईदें बयान हुई हैं, नीज़ दुन्या व आख़िरत में इन के लिये बड़ी सख़्त सज़ाएं हैं।

पारह 6 **सूरतुल माइदह** की आयत नम्बर 33 में इर्शाद होता है :

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِیْنَ یُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ یَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ یُّقَتَّلُوْۤا اَوْ یُصَلَّبُوْۤا اَوْ تُقَطَّعَ اَیْدِیْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ یُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْیٌ فِی الدُّنْیَا وَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ۙ﴿۳۳﴾

तरजमा : बेशक जो लोग **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ते हैं और ज़मीन में फ़साद बरपा करने की कोशिश करते हैं उन की सज़ा येही है कि उन्हें ख़ूब क़त्ल किया जाए या उन्हें सूली दे दी जाए या उन के एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काट दिये जाएं या (मुल्क की सर) ज़मीन से (जला वत़न कर के) दूर कर दिये जाएं। येह उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है।

इस आयते करीमा में डाकू की सज़ा का बयान है।

चोरी किसे कहते हैं ?

चोरी येह है कि दूसरे का माल छुपा कर नाह़क़ ले लिया जाए।

(बहारे शरीअ़त, 2/413, ह़िस्सा : 9)

इस्लामी सज़ाओं की ह़िक्मत

इस्लाम ने हर जुर्म की सज़ा उस की नौइय्यत के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ रखी है, छोटे जुर्म की सज़ा हलकी और बड़े की उस की ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ सख़्त सज़ा नाफ़िज़ की है ताकि ज़मीन में अम्न क़ाइम हो और लोग बे ख़ौफ़ हो कर सुकून और चैन की ज़िन्दगी बसर कर सकें। इस के इ़लावा और भी बे शुमार ह़िक्मतें हैं। डाका ज़नी की सज़ा ही को ले लीजिये कि जब तक इस पर अ़मल रहा तो तिजारती क़ाफ़िले अपने क़ीमती साज़ो सामान के साथ बे ख़ौफ़ो ख़त़र सफ़र करते थे जिस

की वज्ह से तिजारत को बेहद फ़रोग़ मिला और लोग मआ़शी ए'तिबार से बहुत मज़बूत़ हो गए। अब तो ह़ालात इतने नाज़ुक हो चुके हैं कि बेंक से कोई पैसे ले कर निकला तो रास्ते में लुट जाता है, कोई पैदल जा रहा है तो उस की नक़्दी और मोबाइल छिन जाता है, कोई बस का मुसाफ़िर है तो वहां भी मह़फ़ूज़ नहीं, कोई अपनी सुवारी पर है तो वोह ख़ुद को ज़ियादा ख़त़रे में मह़सूस करता है। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 6, तह़तल आयह : 33, 2/423)

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है
उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है

ज़ुल्मन लोगों का माल लेने के मुतअ़ल्लिक़ 7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : चोर पर **अल्लाह** पाक ने ला'नत फ़रमाई है। (بخاری، 4/330، حدیث:6783)

﴿2﴾ जो सरे आ़म लूट मचाए वोह हम से नहीं। (ابوداؤد، 4/184، حدیث:4391)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी जो ज़ालिम खुले बन्दों लोगों का माल छीन ले और लोग मुंह तक्ते रह जाएं, ऐसा ज़ालिम हमारे त़रीक़े, हमारी जमाअ़त से ख़ारिज है, इस्लाम से निकल जाना मुराद नहीं कि येह जुर्म फ़सादे अ़मल है, फ़सादे अ़क़ीदा नहीं। ख़याल रहे! डकैती की सज़ाएं मुख़्तलिफ़ हैं, बा'ज़ सूरतों में उस को सूली दी जाएगी। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/305 मुलख़्ख़सन)

﴿3﴾ चोर चोरी करते वक़्त और डाकू डकैती करने की ह़ालत में मोमिन नहीं होता कि लोग अपने माल को तरस्ती निगाह उठा कर देखते रह जाएं लिहाज़ा इन से बचो, इन से बचो। (بخاری، 3/579، حدیث:5578 ملتقطاً۔ مسلم، ص52، حدیث:207)

शारेह़े बुख़ारी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : इस से येह भी मुराद हो सकती है कि कामिलुल ईमान होते हुए कोई येह गुनाह नहीं कर सकता या येह कि मोमिन की येह शान नहीं कि येह गुनाह करे। (नुज़्हतुल क़ारी, 5/749 तस्हीलन)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : या'नी इन गुनाहों के वक़्त मुजरिम से नूरे ईमान निकल जाता है वरना येह गुनाह कुफ़्र नहीं। डाकू ज़ाहिर जुहूर (खुले आ़म) माल लूट ले और मालिक दफ़्अ़ पर क़ादिर न हों या अपने माल को ह़सरत भरी निगाहों से देखते रह जाएं कि हाए! हमारा माल चल दिया। डकैती में तीन जुर्म हुए : ग़ैर के माल पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा, ज़ाहिर जुहूर दूसरे का माल छीन लेना, दिल की सख़्ती कि लोगों की ह़सरत और आहो बुका पर तर्स न खाए। लिहाज़ा येह गुनाहों का मज्मूआ़ हुई, (इस लिये येह) मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/73)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मत़लब येह है कि चोरी करते वक़्त इस गुनाह की नुहूसत से उस का नूरे ईमान उस से अलग हो जाता है और फिर जब वोह उस गुनाह से तौबा कर लेता है तो उस का नूरे ईमान फिर उस को मिल जाता है। वाज़ेह़ रहे कि डाका डालना, लूटमार करना, किसी की ज़मीन या माल व जायदाद को ग़स्ब कर लेना, किसी से आ़रियत (या'नी उधार) के त़ौर पर कोई सामान ले कर वापस न करना, किसी से क़र्ज़ ले कर उस को अदा न करना, किसी की अमानत में ख़ियानत करना वग़ैरा येह सब चोरी की त़रह़ गुनाहे कबीरा हैं और येह सब क़ह्रे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार होने का सबब और अ़ज़ाबे नार का बाइ़स हैं। (जहन्नम के ख़त़रात, स. 39, 40 मुल्तक़त़न)

चोरी की राह में छुपे हैं अंधेरे हज़ार ईमान का नूर चमकता है रास्ते के पार

﴾4﴿ तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : क़बीलए क़ुरैश की एक औ़रत ने चोरी की तो उस के ख़ानदान वालों ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सिफ़ारिश करने के लिये कहा : ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने सिफ़ारिश की तो नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम **अल्लाह** पाक की ह़दों में से एक ह़द के बारे में सिफ़ारिश करते हो ? फिर खड़े हुए और ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया, फिर फ़रमाया : तुम से पहले लोगों को इस बात ने हलाक किया कि जब उन में से कोई मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर ह़द क़ाइम कर देते। **अल्लाह** की क़सम ! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद भी चोरी कर लेती तो मैं उस का भी हाथ काट देता। (بخاری، 2/468، حدیث:3475)

शर्ह़े ह़दीस : मुजरिम पर रह़्म येह ही है कि उसे पूरी सज़ा दे दी जाए, किसी की किसी त़रह़ रिआ़यत न की जाए कि इस से मुल्क में अमान क़ाइम रहता है, और येह सज़ाएं ह़क़्क़ुल्लाह हैं किसी के मुआ़फ़ करने से मुआ़फ़ नहीं होतीं। ''सय्यिदह'' का नाम ले कर येह बताना मन्ज़ूर है कि शर्ई सज़ा में किसी बड़े से बड़े दरजे वाले की भी रिआ़यत नहीं, रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿وَلَا تَاۡخُذۡكُمۡ بِهِمَا رَاۡفَةٌ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰهِ﴾ **तरजमा :** और तुम्हें **अल्लाह** के दीन में उन पर कोई तर्स न आए। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/309)

﴾5﴿ मैं ने जहन्नम में एक शख़्स को देखा जो अपनी टेढ़ी लाठी के ज़रीए ह़ाजियों की चीज़ें चुराता, जब लोग उसे चोरी करता देख लेते तो कहता : ''मैं चोर नहीं हूं, येह सामान मेरी टेढ़ी लाठी में अटक गया था।'' वोह आग में अपनी टेढ़ी लाठी पर टेक लगाए येह कह रहा था : ''मैं टेढ़ी लाठी वाला चोर हूं।''

(جمع الجوامع، 3/27، حدیث:7076)

शर्हे ह़दीस : मिह्जन (या'नी लाठी)[1] वाले का नाम अ़म्र इब्ने लुह़य है, जब वोह चलता फिरता है तो आंतें घिसटती हैं। रब की पनाह! ग़रज़े कि Fashionable सियासी चोर था कि ह़ुज्जाज के कपड़े दिन दिहाड़े इस त़रह़ चोरी करता था कि पकड़ा भी न जाए और चोरी भी करे, मालिक ने देख लिया तो कह दिया : अरे मुझे ख़बर न हुई कि मेरे मिह्जन (या'नी लाठी) से तेरा कपड़ा लग गया है, न देखा तो माल अपना कर लिया। (मिरआतुल मनाजीह़, 4/316 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله! ❀❀❀ اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴿6﴾ ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरियों की सूरत में होगा।

(مسلم، ص1069، حدیث:6577)

शारेह़े बुख़ारी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़ालिम ज़ुल्म करने की वज्ह से इकठ्ठे कई गुनाहों का इरतिकाब करता है, **अल्लाह** पाक और रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी, एक कमज़ोर मुसल्मान को ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) पहुंचाना, गाली गलोच दे कर, ज़दो कोब कर के या माल छीन कर या इन सब का इरतिकाब एक साथ करना जैसा कि अक्सर देखने में आया। इस लिये इस की सज़ा में क़ियामत के दिन ज़ालिम का ज़ुल्म तारीकियां ही तारीकियां बन कर उसे घेर लेगा। (नुज़्हतुल क़ारी, 3/668 मुल्तक़त़न)

1... ह़दीसे पाक में लफ़्ज़ "मिह्जन" आया है, इस का मा'ना है : ऐसी लाठी जिस के कनारे पर लोहा लगा हुवा हो और वोह "होकी" की त़रह़ मुड़ी हुई हो। (اشعۃ اللمعات، 3/57)

﴾7﴿ ह़राम से पलने वाला जिस्म जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।

(مسند ابی یعلیٰ، 1/57، حدیث:79)

ह़ाफ़िज़ शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक की वईद के तह़्त डाकू, चोर, मस्ख़रा (Comedian), ख़ाइन, जा'लसाज़ (या'नी धोका करने वाला) और उधार चीज़ ले कर इन्कार कर देने वाला, नापतोल में कमी करने वाला, ऐ़ब ज़दा चीज़ को ऐ़ब छुपा कर बेचने वाला, जूआ खेलने वाला येह सब के सब दाख़िल हैं। (76 कबीरा गुनाह, स. 90)

"मिरआतुल मनाजीह़" में है : जैसे मिट्टी के तेल में भीगा हुवा कपड़ा आग में जल्द जल जाता है ऐसे ही सूद, रिश्वत, जूए, चोरी वग़ैरा ह़राम माल से पैदा शुदा गोश्त दोज़ख़ की आग में बहुत जल्द जलेगा, चूंकि ग़िज़ा से ख़ून और ख़ून से गोश्त बनता है इस लिये ग़िज़ा बहुत पाकीज़ा होनी चाहिये, ह़राम ग़िज़ा का असर सारे बदन पर पड़ता है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 4/258)

पूरे क़ाफ़िले को अकेले लूटने वाला डाकू

बहुत बड़े वलिय्युल्लाह ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तौबा से क़ब्ल इतने बड़े और ख़त़रनाक डाकू थे कि पूरे के पूरे क़ाफ़िले को अकेले ही लूट लेते। एक मरतबा एक क़ाफ़िला आप के अ़लाक़े के क़रीब से गुज़रा, उन्हें वहीं रात हो गई। आप डाका डालने की निय्यत से जब क़ाफ़िले के क़रीब पहुंचे तो बा'ज़ क़ाफ़िले वालों को येह कहते हुए सुना : "तुम इस बस्ती की त़रफ़ न जाओ बल्कि कोई और रास्ता इख़्तियार कर लो, यहां फ़ुज़ैल नामी एक ख़त़रनाक डाकू रहता है।"

आप ने जब क़ाफ़िले वालों की येह बात सुनी तो कपकपी त़ारी हो गई और बुलन्द आवाज़ से कहा : ऐ लोगो ! मैं फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ तुम्हारे सामने मौजूद हूं, जाओ ! बे ख़ौफ़ो ख़त़र गुज़र जाओ, तुम मुझ से मह़फ़ूज़ हो । ख़ुदा की क़सम ! आज के बा'द मैं कभी भी **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी नहीं करूंगा । इतना कह कर आप वहां से चले गए और अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा कर के राहे ह़क़ के मुसाफ़िरों में शामिल हो गए । एक क़ौल येह है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस रात क़ाफ़िले वालों की दा'वत की और फ़रमाया : तुम फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ से अपने आप को मह़फ़ूज़ समझो, फिर आप उन के जानवरों के लिये चारा वग़ैरा लेने चले गए, जब वापस आए तो किसी को पारह 27 **सूरतुल ह़दीद** की आयत नम्बर 16 की तिलावत करते हुए सुना : ﴿اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ﴾ **तरजमा :** क्या ईमान वालों के लिये अभी वोह वक़्त नहीं आया कि उन के दिल **अल्लाह** की याद के लिये झुक जाएं ।

क़ुरआने करीम की येह आयत तासीर का तीर बन कर आप के सीने में उतर गई । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने रोना शुरूअ़ कर दिया और अपने कपड़ों पर मिट्टी डालते हुए कहा : हां ! क्यूं नहीं ! **अल्लाह** पाक की क़सम ! अब वक़्त आ गया, अब वक़्त आ गया, आप इसी त़रह़ रोते रहे और फिर अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर ली । (عیون الحکایات، ص212)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

भाई भाई बन जाओ !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! घिनाउने और ह़राम काम चोरी डकैती करने पर चोर, डाकूओं को अपने मुसल्मान भाई को घूरने, डराने, धम्काने, ख़ौफ़ज़दा करने, हाथ उठाने, अस्लह़ा तानने, माल छीनने और ख़वातीन से ज़ेवरात वग़ैरा के ह़ुसूल के लिये ज़ख़्मी करने जैसे कई गुनाह मज़ीद करने पड़ते हैं ह़ालां कि हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मुसल्मान कौन है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानते हैं। इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से (दूसरे) मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें। इर्शाद फ़रमाया : तुम जानते हो कि मोमिन कौन है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानते हैं। इर्शाद फ़रमाया : मोमिन वोह है जिस से ईमान वाले अपनी जानों और मालों को मह़फ़ूज़ समझें। (مسند امام احمد، 2/654، حدیث:6942) एक और ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया : ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! भाई भाई बन जाओ, मुसल्मान मुसल्मान का भाई है, उस पर न ज़ुल्म करे, न उस को रुस्वा करे। (مسلم، ص1064، حدیث:6541)

ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसल्मान को न डराओ ! क्यूं कि मुसल्मान को डराना बहुत बड़ा ज़ुल्म है। (الترغیب والترہیب، 3/386، حدیث:4301) जिस ने किसी मुसल्मान की त़रफ़ डराने वाली नज़र से नाह़क़ देखा तो **अल्लाह** पाक बरोज़े क़ियामत इस के बदले उसे ख़ौफ़ज़दा करेगा। (معجم کبیر، 8/116، حدیث:7536)

बद नसीब लोग

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِيْ وَ مَنْ اٰذَانِيْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰهَ" जिस ने मुसल्मान को तक्लीफ़ दी उस ने मुझे

तक्लीफ़ दी और जिस ने मुझे तक्लीफ़ दी उस ने **अल्लाह** पाक को तक्लीफ़ दी। (معجم اوسط، 2/386، حدیث:3607) जिस ने **अल्लाह** पाक को तक्लीफ़ दी, बिल आख़िर **अल्लाह** पाक उसे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार फ़रमाएगा। (ترمذی، 5/463، حدیث:3888)

ह़ज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ईमान वालों को तक्लीफ़ देना गोया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अज़िय्यत देना है और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ देना गोया कि **अल्लाह** पाक को अज़िय्यत देना है, तो जिस त़रह़ **अल्लाह** पाक और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अज़िय्यत देने वाला दुन्या और आख़िरत में ला'नत का मुस्तह़िक़ है, इसी त़रह़ ईमान वालों को तक्लीफ़ देने वाला भी दोनों जहां में ला'नत व रुस्वाई का ह़क़दार है। (تفسیر روح البیان، پ22، تحت الآیۃ:58، 7/239)

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जहन्नमियों पर ख़ारिश मुसल्लत़ कर दी जाएगी तो वोह अपने जिस्म को खुजलाएंगे ह़त्ता कि उन में से एक के चमड़े से हड्डी ज़ाहिर हो जाएगी तो उसे पुकारा जाएगा : ऐ फ़ुलां ! क्या तुम्हें इस से तक्लीफ़ होती है ? वोह कहेगा : हां। पुकारने वाला कहेगा : तू मुसल्मानों को तक्लीफ़ पहुंचाया करता था येह उस की सज़ा है। (احیاء العلوم، 2/242)

हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठें बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 76)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाहु ग़नी की शाने बे नियाज़ी के क़ुरबान ! जब वोह नवाज़ने पर आता है तो कैसे नवाज़ता है, **मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** में है :

डाकू वली बन गया

(इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया :) **अल्लाह** पाक को हिदायत फ़रमाते देर नहीं लगती । ह़ज़रते अबू बक्र बिन हवार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पहले रहज़न (या'नी डाकू) थे, क़ाफ़िले के क़ाफ़िले तन्हा लूटा करते थे । एक बार एक क़ाफ़िला ठहरा, आप वहां तशरीफ़ ले गए, एक ख़ैमे की त़रफ़ गए, उस ख़ैमे में औ़रत अपने शौहर से कह रही थी : शाम क़रीब है और इस जंगल में "अबू बक्र बिन हवार" का दख़्ल है, ऐसा न हो कि वोह आ जाएं ! बस येह कहना उन का हादी (या'नी हिदायत का सबब) हो गया, ख़ुद से फ़रमाया : अबू बक्र ! तेरी ह़ालत येह हो गई कि ख़ैमों में औ़रतें तक तुझ से ख़ौफ़ करती हैं और तू ख़ुदा से नहीं डरता ! उसी वक़्त तौबा की और घर को लौट आए, रात सोए तो ख़्वाब में ज़ियारते अक़्दस (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से मुशर्रफ़ हुए, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه भी थे, आप ने अ़र्ज़ किया : बैअ़त लीजिये ! इर्शाद फ़रमाया : तुझ से तेरा हमनाम बैअ़त लेगा, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه ने बैअ़त ली और अपनी कुलाह (या'नी इमामा) मुबारक उन के सर पर रखी, आंख खुली तो कुलाहे अक़्दस मौजूद थी । सिल्सिलए हवारिया आप से शुरूअ़ हुवा । (जामेअ़ करामाते औलिया, 1/425, मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 445 बित्तस्हील) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जहन्नम का खौलता हुवा पानी

सुल्त़ानुल वाइ़ज़ीन मौलाना अबुन्नूर बशीर कोटलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

लिखते हैं : जिन लोगों ने सूद, रिश्वत, ग़बन और दीगर ना जाइज़ त़रीक़ों से जो माल कमाया और खाया है, कल क़ियामत के दिन जब शहन्शाहे ह़क़ीक़ी उन्हें जहन्नम का खौलता हुवा पानी पिलाएगा तो येह सारा ह़राम का माल वहां उगलना पड़ेगा और चोर पकड़े जाएंगे, पस आज तौबा के साथ मे'दा साफ़ कर लेना चाहिये। (सच्ची ह़िकायात, 3/316 ब तग़य्युर)

चोर, डाकू से बड़ा ज़ालिम

"तफ़्सीरे क़ुरतुबी" में है : जो चोर और डाकू मुसाफ़िरों और शह्रियों से लूटमार कर के उन पर ज़ुल्म करते हैं येह सब ज़ालिम की सफ़ में शामिल हैं, इन तमाम पर **अल्लाह** पाक कोई उन से बड़ा ज़ालिम मुसल्लत़ कर देता है। (تفسیر قرطبی، پ8، تحت الآیۃ:128، 4/62 ملخصاً)

क़त्ले नाह़क़ का गुनाह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ दरिन्दा सिफ़त चोर, डाकू अपने लिये जहन्नम की आग मज़ीद बढ़ाने के लिये क़त्लो ग़ारत गरी से भी बाज़ नहीं आते और यूं मालो दौलत के साथ साथ बसा अवक़ात किसी घर के वाह़िद कफ़ील (या'नी कफ़ालत करने वाले) को शहीद कर के किसी ख़ातून को बेवा और बच्चों को यतीम कर देते हैं।

बसा अवक़ात चोर डाकू पकड़े जाने के ख़ौफ़ से या सामने से होने वाली मुज़ाह़मत के नतीजे में फ़ायर कर के सामने वाले को ज़ख़्मी या शहीद कर के भाग जाते हैं, वोह समझते हैं कि हम गोया पकड़े जाने से बच गए लेकिन याद रखें ! अगर वोह दुन्या में पोलीस या क़ानून से बच भी गए तो इस ह़राम काम से तौबा और तौबा के तक़ाज़े पूरे न करने के सबब क़ियामत के दिन ऐसी जगह क़ैद होंगे जहां से उन्हें कोई छुड़ा नहीं सकेगा। दुन्या में

बसा अवक़ात रिश्वत या असरो रुसूख़ के सबब जेल से भी बाहर आ जाते हैं लेकिन क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से बच नहीं पाएंगे। किसी मुसल्मान को नाहक़ क़त्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है। क़ुरआनो ह़दीस में इस गुनाह का बहुत सख़्त अ़ज़ाब बयान किया गया है, चुनान्चे पारह 5, **सूरतुन्निसाअ**, आयत नम्बर 93 में इर्शाद होता है :

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾

तरजमा : और जो किसी मुसल्मान को जान बूझ कर क़त्ल कर दे तो उस का बदला जहन्नम है अ़र्सए दराज़ तक उस में रहेगा और **अल्लाह** ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये बड़ा अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

क़त्ले नाहक़ का अ़ज़ाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़त्ले मुस्लिम मा'मूली बात नहीं है, आज कल छोटी छोटी बातों पर जान से मार देना, गुन्डा गर्दी, दहशत गर्दी, डकैती, ख़ानदानी लड़ाई, तअ़स्सुब वाली लड़ाइयां आ़म हैं। मुसल्मानों का ख़ून पानी की त़रह़ बहाया जाता है। मरने के बा'द क़त्ल करने का अ़ज़ाब सहा नहीं जा सकेगा, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर ज़मीनो आस्मान वाले किसी मुसल्मान के क़त्ल पर जम्अ़ हो जाएं तो **अल्लाह** पाक सब को औंधे मुंह जहन्नम में डाल देगा।" (معجم صغیر، 205/2) एक और ह़दीसे पाक में है : एक मोमिन का क़त्ल किया जाना **अल्लाह** पाक के नज़्दीक दुन्या के तबाह हो जाने से ज़ियादा बड़ा है। (نسائی، ص652، حدیث:3992)

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

महशर में ज़िल्लतो रुस्वाई

इमाम शरफ़ुद्दीन हुसैन बिन मुहम्मद तीबी رَحْمَۃُاللہِعَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जिस ने दुन्या में ज़कात या किसी और माल से चोरी की तो क़ियामत के दिन वोह इस तरह आएगा कि चोरी के माल को उठाए हुए होगा, अगर वोह माल कोई जानवर हुवा तो वोह जानवर बुलन्द आवाज़ से चीख़ता होगा और उसे तमाम महशर वाले पहचान लेंगे (कि येह चोर है) ताकि उस की ख़ूब ज़िल्लतो रुस्वाई हो।" (شرح طیبی،4/17،تحت الحدیث:1779)

शहादत का दरजा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी शख़्स का माल चोरी हो जाए और वोह उस पर सब्र करे तो उस को सदके़ का सवाब मिलेगा और जो शख़्स अपना माल बचाने, अपनी जान या अपने घर वालों की जान बचाने में मारा जाए वोह शहीद है जैसा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो अपना माल बचाने में मारा जाए वोह शहीद, जो अपनी जान बचाने में मारा जाए वोह शहीद, जो अपना दीन बचाने में मारा जाए तो वोह शहीद और जो अपने घर वालों को बचाने में मारा जाए वोह शहीद है।

(ترمذی،3/112،حدیث:1426۔ نسائی،ص667،حدیث:4101)

ख़ूब सूरत सोच

हज़रते अहमद बिन हर्ब رَحْمَۃُاللہِعَلَیْہ के पड़ोस में एक शख़्स के हां चोरी हो गई। आप अपने दोस्तों के साथ उस की ग़म ख़्वारी को तशरीफ़ ले गए। पड़ोसी ने बड़ी ख़न्दा पेशानी से उन का इस्तिक़्बाल किया। हज़रते अहमद बिन हर्ब رَحْمَۃُاللہِعَلَیْہ ने फ़रमाया : हम तुम्हारी चोरी होने का अफ़्सोस करने आए हैं। पड़ोसी बोला : मैं तो **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा कर रहा

हूं और मुझ पर उस के तीन शुक्र वाजिब हो गए हैं। एक येह कि दूसरों ने मेरा माल चुराया है, मैं ने नहीं। दूसरा येह कि अभी आधा माल मेरे पास मौजूद है, तीसरा येह कि मेरी दुन्या को नुक़्सान पहुंचा है और दीन मेरे पास है। (सच्ची ह़िकायात, 4/142) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आह ! दौलत की ह़िफ़ाज़त में तो सब हैं कोशां ह़िफ़्ज़े ईमां का तसव्वुर ही मिटा जाता है

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! **अल्लाह** वालों की भी कितनी प्यारी सोच होती है कि माल गया ईमान तो नहीं गया, "कुछ माल" गया है सब तो नहीं गया। **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे ज़बान पर शिक्वा शिकायत नहीं लाते, हर ह़ाल में **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर सब्र करते और अज्र पाते हैं। ईमान अनमोल दौलत है, येह सलामत है तो कुछ ग़म नहीं होना चाहिये, हमें भी चाहिये कि अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहा करें।

या ख़ुदा जिस्म में जब तक के मेरी जान रहे तुझ पे सदक़े तेरे महबूब पे क़ुरबान रहे
कुछ रहे या न रहे पर येह दुआ है कि अमीर नज़्अ़ के वक़्त सलामत मेरा ईमान रहे

चोर को दुआ़

एक मरतबा ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का घोड़ा चोरी हो गया। साथ वालों ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! चोर के लिये बददुआ़ कीजिये।" आप ने फ़रमाया : "नहीं बल्कि मैं तो उस के लिये दुआ़ ही करूंगा।" फिर यूं दुआ़ फ़रमाई : "ऐ **अल्लाह** पाक ! अगर चोर मालदार है तो उस के दिल को क़नाअ़त की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और अगर फ़क़ीर है तो उसे ग़नी कर दे।" (حلیۃ الاولیاء، 2/130، رقم:1696)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता चोरी या डकैती की वारिदात हो जाए तो हर एक को बताने के बजाए अपनी मुसीबत छुपा कर, सब्र कर के अज्र कमाएं। लोगों को बताने से किसी ने खोई हुई चीज़ वापस ला कर तो देनी नहीं, नतीजतन शिक्वा व शिकायत हो जाने की सूरत में मिलने वाले अज्र से महरूमी हो सकती है।

ज़ुल्म पर सब्र की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: अल्लाह** पाक जब मख़्लूक़ को जम्अ फ़रमाएगा तो एक ए'लान करने वाला ए'लान करेगा : फ़ज़्ल वाले कहां हैं ? तो कुछ लोग खड़े होंगे और उन की ता'दाद बहुत कम होगी। जब येह जल्दी से जन्नत की त़रफ़ बढ़ेंगे तो फ़िरिश्ते उन से मुलाक़ात करेंगे और कहेंगे : हम देख रहे हैं कि तुम तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ जा रहे हो, तुम कौन हो ? वोह जवाब देंगे : हम फ़ज़्ल वाले हैं। फ़िरिश्ते कहेंगे : तुम्हारा फ़ज़्ल क्या है ? वोह जवाब देंगे : जब हम पर ज़ुल्म किया जाता था तो हम सब्र करते थे और जब हम से बुराई का बरताव किया जाता था तो उसे बरदाश्त करते थे। फिर उन से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ कि अच्छे अ़मल वालों का सवाब कितना अच्छा है। (الترغیب والترہیب، 3/281، حدیث:18) **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मज़्लूम जब ज़ुल्म पर सब्र करता है तो **अल्लाह** पाक उस की इ़ज़्ज़त बढ़ा देता है। (ترمذی، 4/145، حدیث:2332)

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो ! आ़शिक़ के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके

डाकू की तौबा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल की बरकत से बड़े बड़े चोर

डाकूओं के राहे रास्त पर आने के वाक़िआ़त हैं। दा'वते इस्लामी की एक मजलिस राबिता़ बिल उ़लमा भी है, इस मजलिस के इस्लामी भाई मश्हूर दीनी दर्सगाह जामिआ़ राशिदिया तशरीफ़ ले गए। बात निकली तो वहां के शैख़ुल ह़दीस साहिब कुछ इस त़रह़ फ़रमाने लगे : दीनी काम की कारकर्दगी मैं ख़ुद आप को सुनाता हूं, किसी अ़लाक़े में एक डाकू ने तबाही मचा रखी थी, मैं उसे जानता था, आए दिन पोलीस के साथ उस की आंख मचोली जारी रहती, कई बार गिरिफ़्तार भी हुवा, मगर तअ़ल्लुक़ात इस्ति'माल कर के छूट गया, आख़िर किसी जुर्म में पोलीस के हथ्थे चढ़ गया, सज़ा हुई और जेल में चला गया, सज़ा काट लेने के बा'द रिहाई मिलने पर मुझ से मिलने आया, मैं पहली नज़र में उसे पहचान न सका क्यूं कि उस के चेहरे पर मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी, नूरानी दाढ़ी जगमगा रही थी, सर पर इमामे शरीफ़ का ताज, पेशानी पर नमाज़ों का नूर नज़र आ रहा था, वोह बोला : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मुझे दा'वते इस्लामी का दीनी माह़ोल मिल गया।

अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो सुधर जाएंगे गर मिला दीनी माह़ोल
गुनहगारो आओ, सियहकारो आओ गुनाहों को देगा छुड़ा दीनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ह़लाल कमाइये

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रूहुल कुदुस (या'नी ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام) ने मेरे दिल में डाला कि कोई जान न मरेगी ह़त्ता कि अपना रिज़्क़ पूरा करे, ख़याल रखो कि **अल्लाह** से डरो, तलाशे रिज़्क़ में

दरमियानी राह इख़्तियार करो और रिज़्क़ में देर लगना तुम को इस पर न उक्साए कि तुम **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी से रिज़्क़ ढूंडो क्यूं कि **अल्लाह** के पास की चीज़ें उस की फ़रमां बरदारी से ही ह़ासिल की जा सकती हैं।

(شرح السنۃ، 7/330، حدیث:4008ملخصًا)

शर्ह़े ह़दीस : या'नी ह़लाल ज़रीए़ से रोज़ी कमाओ, ह़राम ज़रीओं से बचो, ह़राम ज़रीओं से कमाना इफ़्रात़ (या'नी ह़द से बढ़ना) है और बिल्कुल कमाई न करना बेकार बैठ रहना तफ़्रीत़ (या'नी ह़द से ज़ियादा कमी करना), दरमियानी राह येह है (कि) अगर कभी रोज़ी कम मिले या कुछ रोज़ के लिये न मिले तो चोरी, जूआ, रिश्वत, ख़ियानत, ग़स्ब वग़ैरा से रोज़ी ह़ासिल करने की कोशिश न करो, ह़लाल काम किये जाओ, उस की मेह्रबानी से उम्मीद रखो या'नी सब की रोज़ी **अल्लाह** के ही पास है, अगर तुम ने उसे ह़राम ज़रीए़ से ह़ासिल किया तो वोह ह़राम हो कर तुम तक पहुंची, रब भी नाराज़ हुवा मगर मिला वोही जो तुम्हारा ह़िस्सा था, और अगर ह़लाल ज़रीए़ से ह़ासिल किया तो वोह ह़लाल हो कर तुम्हारे पास पहुंचा, **अल्लाह** पाक भी राज़ी हो गया, मिला तुम्हारा ह़िस्सा ही।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7/114)

बड़ी बड़ी मूंछों वाला बद मआ़श

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले इ़ल्मे दीन के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी अहम ज़रीआ़ हैं, आप भी अपने शह्र में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत कीजिये, इन इज्तिमाआ़त की बरकत से कैसे कैसे बिगड़े हुए लोगों की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, इस की एक झलक इस मदनी बहार में पढ़िये :

एक आ़लिम साहि़ब जो कि दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ हैं, उन्हों ने बताया कि 1995 सि.ई. में एक शख़्स जिस पर कमो बेश 11 डकैतियों के केस थे, जिन में एक क़त्ल का मुक़द्दमा भी शामिल है। एक साल जेल की सलाख़ों के पीछे भी रहा था, महकमए नह्र में मुलाज़मत भी थी, तनख़्वाह 3000 थी मगर वोह ना जाइज़ ज़राएअ़ से मसलन दरख़्त फ़रोख़्त कर के, चोरी का पानी वग़ैरा दे कर माहाना 10000 तक कर लेता, उस ने बड़ी बड़ी मूंछें रखी थी, देखने वाले को उस से वहशत होती, एक रोज़ मैं ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उसे दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की मगर उस ने मेरी दा'वत टाल दी, मैं ने हिम्मत नहीं हारी वक़्तन फ़ वक़्तन दा'वत पेश करता रहा, आख़िरे कार कमो बेश दो साल बा'द उस ने दा'वत क़बूल कर ली और वोह इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया, इत्तिफ़ाक़ से उस दिन मेरा ही बयान था जो कि जहन्नम के अ़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ था, जहन्नम की तबाहकारियां सुन कर सख़्त सर्दियों का मौसिम होने के बा वुजूद बद मआ़श पसीने से शराबोर हो गया, बा'दे इज्तिमाअ़ वोह रोता जाता और कहता जाता : हाए ! मेरा क्या बनेगा ? मैं ने बहुत सारे गुनाह किये हैं, फिर वोह तीन दिन बुख़ार के आ़लम में रहा, उसे अपने गुनाहों का शिद्दत से एह़सास हो चुका था, उस ने तौबा कर ली और नमाज़ें भी पढ़ने लगा, दूसरी जुमे'रात उसे फिर इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत मिली और जन्नत के मौज़ूअ़ पर बयान सुन कर उस को ढारस मिली, आहिस्ता आहिस्ता उस पर मदनी रंग चढ़ता चला गया, यहां तक कि वोह दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया, दाढ़ी और

इमामा सजाने की सआ़दत भी ह़ासिल कर ली। येह बयान देते वक़्त वोह दा'वते इस्लामी के दीनी कामों में मश्गूल तन्ज़ीमी तौ़र पर सूबाई सत्ह़ पर मजलिसे खुद्दामुल मसाजिद की ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ है।

अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो सुधर जाएंगे गर मिला दीनी माह़ोल
गुनहगारो आओ, सियहकारो आओ गुनाहों को देगा छुड़ा दीनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जानो माल की ह़िफ़ाज़त के लिये चन्द रूह़ानी इलाज पेश किये जाते हैं, اِنْ شَآءَ الله इन की बरकत से जानो माल और घर वग़ैरा की ह़िफ़ाज़त होगी।

चोर, डाकू से ह़िफ़ाज़त के 6 वज़ीफ़े

﴾1﴿ मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर फ़रमाते हुए सुना : जो कोई रात को सोते वक़्त इसे (या'नी आयतुल कुरसी को) पढ़ेगा, **अल्लाह** पाक उसे, उस के घर को और आसपास के घरों को मह़फ़ूज़ फ़रमा देगा।

(شعب الایمان، 2/458، حدیث:2395)

शर्ह़े ह़दीस : इस की बरकत से सारे मह़ल्ले में चोरी, आग लगने, मकान गिर जाने बल्कि सारी ना गहानी आफ़तों से सुब्ह़ तक अम्न रहेगा, येह अ़मल बहुत मुजर्रब है। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/126)

﴾2﴿ अगर इसे लिख कर फ़्रेम बनवा कर मकान में ऊंची जगह लगा देंगे तो اِنْ شَآءَ الله उस घर में कभी फ़ाक़ा न होगा बल्कि रोज़ी में बरकत होगी और उस मकान में कभी चोर न आ सकेगा। (मदनी पंजसूरह, स. 30)

﴾3﴿ ''یَا جَلِیْلُ'' 10 बार पढ़ कर अपने मालो अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه चोरी से महफ़ूज़ रहेगा। (मदनी पंजसूरह, स. 289)

﴾4﴿ ''**सूरतुत्तौबह**'' लिख या लिखवा कर, प्लास्टिक कोटिंग करवा कर, अपने सामान में रखिये ! اِنْ شَآءَاللّٰه चोरी से महफ़ूज़ रहेगा।

(चिड़िया और अन्धा सांप, स. 29)

﴾5﴿ माल चोरी या गुम हो जाए, येह आयते मुबारका बे शुमार पढ़ने से मिल जाएगा, اِنْ شَآءَاللّٰه ।

یٰبُنَیَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِیْ صَخْرَةٍ اَوْ فِی السَّمٰوٰتِ اَوْ فِی الْاَرْضِ یَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِیْفٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۶﴾ (پ21، لقمٰن:16)

(चिड़िया और अन्धा सांप, स. 29)

﴾6﴿ अगर रात को सोते वक़्त 21 मरतबा ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ'' पढ़ लें तो اِنْ شَآءَاللّٰه मालो अस्बाब चोरी से महफ़ूज़ रहेंगे और मर्गे ना गहानी (या'नी अचानक मौत) से भी हिफ़ाज़त होगी। (जन्नती ज़ेवर, स. 579)

शजरए अ़त्तारिय्या की मदनी बहार

एक इस्लामी भाई सिल्सिलए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या में मुरीद थे, उन्हों ने क़सम खाते हुए बयान दिया कि एक मरतबा उन के ऑफ़िस में डाकू आ गए और अस्लहा निकाल कर लूटना शुरूअ़ कर दिया। उन की अन्दर की जेब में नव्वे हज़ार (90000) रुपै थे जब कि आगे की जेब में चन्द नोट थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! वोह मुत्मइन थे क्यूं कि उन्हों ने अपने शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या से येह दुआ पढ़ ली थी :

''بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی دِیْنِیْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی نَفْسِیْ وَوُلْدِیْ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ''

इस दुआ़ की फ़ज़ीलत येह है कि जो कोई सुब्ह़ो शाम तीन तीन बार पढ़ ले तो उस का दीन, ईमान, जान, माल और बच्चे सब मह़फ़ूज़ रहते हैं। (अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 13)

इतने में एक डाकू उन के क़रीब आया और उन की जेब से पचास (50) रुपै निकाल लिये, वोह सोचने लगे कि 90 हज़ार हों या पचास (50) रुपै, इस दुआ़ की बरकत से तो सब की ह़िफ़ाज़त होनी चाहिये, अभी वोह येह सोच ही रहे थे कि डाकू लाखों रुपै लूट कर जाने लगे तो वोही "डाकू" जिस ने उन की जेब से 50 रुपै निकाले थे, उन के क़रीब आया और येह कहते हुए कि मौलाना ! क्या याद करोगे पचास रुपै वापस जेब में डाल दिये।

ऐ निगह़बान मेरे तुझ पे सलात और सलाम दो जहां में तेरे बन्दे हैं सलामत मह़फ़ूज़

(ज़ौक़े ना'त, स. 147)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
सातवें आस्मान का फ़िरिश्ता	1	चोर, डाकू से बड़ा ज़ालिम	16
चोरों और डाकूओं के मज़ालिम	3	क़त्ले नाहक़ का गुनाह	16
डाकूओं का अन्जाम	5	क़त्ले नाहक़ का अ़ज़ाब	17
चोरी किसे कहते हैं ?	6	महशर में ज़िल्लतो रुस्वाई	18
इस्लामी सज़ाओं की हिक्मत	6	शहादत का दरजा	18
ज़ुल्मन लोगों का माल लेने के मुतअ़ल्लिक़ 7 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	7	ख़ूब सूरत सोच	18
		चोर को दुआ़	19
		ज़ुल्म पर सब्र की फ़ज़ीलत	20
पूरे क़ाफ़िले को अकेले लूटने वाला डाकू	11	डाकू की तौबा	20
		हलाल कमाइये	21
भाई भाई बन जाओ !	13	बड़ी बड़ी मूंछों वाला बद मआ़श	22
बद नसीब लोग	13	चोर, डाकू से हिफ़ाज़त के 6 वज़ीफ़े	24
डाकू वली बन गया	15		
जहन्नम का खौलता हुवा पानी	15	शजरए अ़त्तारिय्या की मदनी बहार	25

अगले हफ़्ते का रिसाला

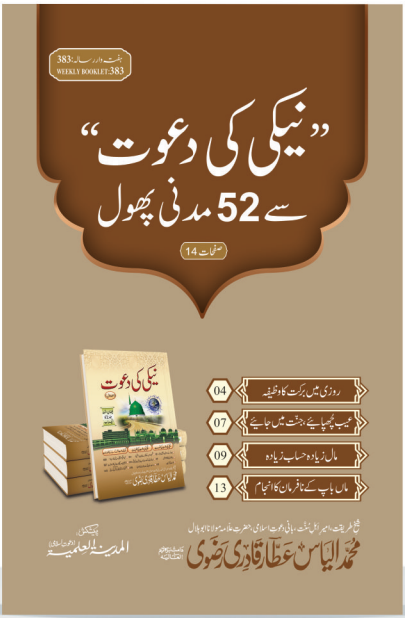

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025